

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 22, 20 वीं सदी का कट्टरवाद, डिस्पेंसेशनलिज्म, होलीनेस मूवमेंट और पेंटेकोस्टलिज्म

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 22 है, 20वीं सदी का कट्टरवाद, डिस्पेंसेशनलिज्म, होलीनेस मूवमेंट और पेंटेकोस्टलिज्म।

मेरे पास यहाँ कोई पावरपॉइंट नहीं है, और मैं पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन [टेड हिल्डेब्रांट द्वारा प्रेजेंटेशन] को बाधित नहीं करना चाहता।

इसलिए, मैंने सोचा कि मैं इस पेपर में कुछ बातें, जैसे कि डिस्पेंसेशनलिज्म का विवरण और मेरी पृष्ठभूमि, लिखूंगा। मैंने ग्रेस थियोलॉजिकल सेमिनरी नामक जगह से स्नातक किया है, जो 1980 के दशक में एक डिस्पेंसेशनल स्कूल है। डिस्पेंसेशनलिज्म क्या है? मोटे तौर पर, यह एक निम्न चर्च है।

हमारे पास उच्च चर्च एंग्लिकन विचार हैं। यह कम चर्च दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया है, मुझे लगता है, 20वीं सदी की शुरुआत में, 19वीं सदी के अंत में, 20वीं सदी में आने वाली सर्वनाशकारी चुनौतियों के प्रति। आपके पास औद्योगीकरण है और औद्योगीकरण के साथ आने वाली सभी नई तकनीकें हैं।

मुझे लगता है कि प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध भी हुआ था; ये सर्वनाशकारी चीजें थीं। दुनिया में विस्फोट होने वाला था, और इस तरह की चीजें, साथ ही आंदोलन भी। मुझे लगता है कि, इसकी पृष्ठभूमि में, वैश्वीकरण की पूरी धारणा इसमें एक बड़ी भूमिका निभाती है, जिसमें दुनिया को एहसास होता है कि चर्च एक वैश्विक सेटिंग में है।

मुझे लगता है कि यह उन तरह की चीजों के जवाबों में से एक है। मोटे तौर पर, डिस्पेंसेशनलिज्म जो करता है वह बाइबल को सात डिस्पेंसेशन में विभाजित करता है। ये डिस्पेंसेशन ऐसे समय होते हैं जिनमें परमेश्वर एक विशेष तरीके से एक विशेष लोगों के साथ काम करता है।

बड़े पैमाने पर डिस्पेंसेशनलिज्म इन दोनों के बीच बहुत अंतर देखता है। इसलिए, इस्राएल चर्च से अलग है, और वे इस्राएल और चर्च के बीच अंतर देखते हैं। इसलिए इन सभी युगों के बीच वास्तविक अलगाव है कि परमेश्वर ने इन सभी युगों में अलग और अलग तरीके से काम किया।

पारंपरिक दृष्टिकोण मुख्य रूप से परमेश्वर के लोगों, पुराने नियम और नए नियम को देखता है, और सकारात्मक तरीके से परमेश्वर के लोगों को जोड़ता है और नियमों के बीच निरंतरता को देखता है। व्यवस्थावादी दृष्टिकोण निरंतरता के बजाय असंततता को देखता है और इस्राएल को कार्यो और बलिदानों और चीजों के माध्यम से एक तरह के उद्धार के रूप में देखता है। चर्च अनुग्रह के अधीन था।

इसलिए, ईश्वर के लोगों, इस्राएल और चर्च के बीच एक बड़ा अंतर है। इसलिए, इस्राएल और चर्च के बीच एक बड़ा अंतर है। इसलिए, डिस्पेंसेशनलिस्टों के लिए, 1948 में इस्राएल का वापस भूमि पर आना एक बड़ी पुष्टि थी कि इस्राएल अब भूमि पर वापस आ गया है।

आप जानते हैं कि ऐसा कौन सा देश है जो इस तरह से फिर से स्थापित हुआ है, जैसे कि इज़राइल हुआ है? दुनिया में लगभग कोई भी ऐसा देश नहीं है जिसने कभी ऐसा किया हो। इसलिए, इसे कुछ हद तक चीजों के प्रति व्यवस्थागत दृष्टिकोण की पुष्टि के रूप में देखा गया। यह सब डार्बी नाम के एक व्यक्ति के साथ शुरू हुआ, जो प्लायमाउथ ब्रेथ्रेन ओरिएंटेशन में शामिल था।

फिर से, यह एक निम्न चर्च की तरह की बात है। प्लायमाउथ ब्रेथ्रेन, मेरे दादा वास्तव में प्लायमाउथ ब्रेथ्रेन थे। यह 1800 से 1882 तक की बात है।

तो, 19वीं सदी के आखिरी हिस्से में। डार्बी प्लायमाउथ ब्रेथ्रेन था, छोटे समूह के बजाय छोटा समूह। लेकिन यह सीआई स्कोफील्ड नामक एक व्यक्ति के साथ पकड़ा गया।

उनके पास स्कोफील्ड रेफरेंस बाइबल थी। इस बाइबल का इस्तेमाल तब मेरे माता-पिता और दूसरे लोग करते थे। हाय, जेसी।

स्कोफील्ड रेफरेंस बाइबल का इस्तेमाल किया गया। वे इसे ओल्ड स्कोफील्ड रेफरेंस कहते हैं। यह व्यवस्था-संबंधी था और मूल रूप से बाइबल को इन सात अलग-अलग अवधियों में रेखांकित करता था।

तो वह पुरानी स्कोफील्ड बाइबिल थी। फिर एक नई स्कोफील्ड बाइबिल आई, मुझे नहीं पता, सत्तर या अस्सी के दशक में, और इसे कुछ अच्छे विद्वानों ने अपडेट किया था, वास्तव में। तो, नई स्कोफील्ड थी, लेकिन स्कोफील्ड बाइबिल ने इसे प्रचारित करने में भी मदद की। क्या आपको डॉ. ग्रीन द्वारा बाइबिल सम्मेलन आंदोलन और नियाग्रा बाइबिल सम्मेलन के बारे में बात करना याद है? दरअसल, मैं नियाग्रा फॉल्स में रहता था।

उनके पास ये नियाग्रा बाइबिल सम्मेलन थे, और मोटे तौर पर, उनके पास ये भविष्यवाणी सम्मेलन होते थे, और ये भविष्यवाणी वक्ता आते थे। मुझे संदेहवादी नहीं होना चाहिए, लेकिन भविष्यवाणी वक्ता आते थे, और वे बड़े पैमाने पर इस व्यवस्थावाद का एक पहलू लेते थे। अब, जो हुआ वह यह था कि यह कट्टरवाद से जुड़ा हुआ था, लेकिन यह जरूरी नहीं था; कट्टरवाद एक अलग चीज भी हो सकती है।

आपके पास वेस्टमिंस्टर में आने वाले प्रिंसटनियन और कट्टरपंथ की ऐसी शाखा है जो पवित्रशास्त्र की अचूकता के बारे में चिंतित थी। लेकिन फिर आपके पास डिस्पेंसेशनलिस्ट भी हैं जिन्होंने बाइबल को बहुत शाब्दिक रूप से लिया, और उन्हें वास्तव में गर्व था कि उन्होंने बाइबल को शाब्दिक रूप से लिया। डीएल मूडी के कुछ लोग डिस्पेंसेशनल आंदोलन का हिस्सा थे।

आरए टॉरे नाम का एक आदमी मशहूर था। ये मशहूर पुराने नाम हैं। विलियम एर्डमैन, आपने शायद एर्डमैन पब्लिशिंग हाउस के बारे में सुना होगा।

विलियम एर्डमैन इनमें से कुछ लोगों में से एक थे। एजे गॉर्डन, आपने उनके बारे में सुना होगा, वे भी इस डिस्पेंसेशनल आंदोलन से जुड़े थे। ओल्ड आयरनसाइड्स एक टिप्पणीकार थे जिन्होंने टिप्पणीकार लिखे थे।

मुझे लगता है कि वह एक रेडियो व्यक्तित्व भी थे, और उनके पास एक रेडियो था। वे रेडियो आंदोलन में बड़े थे, और बार्नहाउस एक टिप्पणीकार और एक रेडियो प्रचारक थे। आंदोलन तब प्रचारकों से आगे बढ़ा, जो इस आंदोलन में शामिल थे, जो इन गर्मियों के दौरान होता था। फिर यह संस्थानों में चला गया, और उन्होंने इसे स्कूलों में संस्थागत बना दिया।

कुछ स्कूल जो इसके लिए बहुत प्रसिद्ध हैं, जैसे मूडी बाइबिल इंस्टीट्यूट, डिस्पेंसेशनलिज्म का समर्थन करते हैं। सबसे प्रसिद्ध कॉलेजों में से एक फिलाडेल्फिया कॉलेज ऑफ द बाइबल था। मुझे नहीं पता कि आपने कभी इसके बारे में सुना है या नहीं।

इसे पीसीबी, फिलाडेल्फिया कॉलेज ऑफ द बाइबल कहा जाता था, जो स्कोफील्ड और डिस्पेंसेशनल आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए प्रसिद्ध स्थान था। डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी, एक और बड़ी सेमिनरी, 1924 में संस्थापक लोगों में से एक, कैलिफोर्निया में बायोला की तरह डिस्पेंसेशनलिज्म का एक बड़ा मजबूत गढ़ था। फिर, मैंने इंडियाना के विनोना लेक में ग्रेस थियोलॉजिकल सेमिनरी और ग्रेस कॉलेज में अपनी शिक्षा प्राप्त की, जो बिली संडे और वहां गर्मियों के सम्मेलनों का घर भी था।

ये स्कूल हैं फिलाडेल्फिया कॉलेज ऑफ द बाइबल, डलास, ग्रेस सेमिनरी और बायोला। और अब हमारे पास जॉन मैकआर्थर जैसे लोग हैं। अगर आपने मास्टर्स और इस तरह की चीजों के बारे में सुना है, तो वे लोग अभी भी डिस्पेंसेशनल फ्लेवर के ज्यादा होंगे। डिस्पेंसेशनल आंदोलन में कुछ धर्मशास्त्री प्रचारक से धर्मशास्त्री और संस्थानों में चले गए।

जब उनके पास संस्थाएँ थीं, तो लुईस बैरी चेफ़र ने, मुझे नहीं पता, डिस्पेंसेशनलिज्म पर आधारित धर्मशास्त्र के इस घनेपन के बारे में सात खंड लिखे। तो यह लुईस बैरी चेफ़र द्वारा किया गया क्लासिक उपचार है। आप उनकी तिथियाँ देखें।

वे आंदोलन में पुराने थे, और जब यह शुरू हुआ तो वे संभवतः डलास सेमिनरी के अध्यक्ष थे। तब चेफ़र से, जो क्लासिक पुराने डिस्पेंसेशनलिस्ट थे, इसे उस व्यक्ति को सौंप दिया गया जिसे मैं दूसरी पीढ़ी कहूंगा। दूसरी पीढ़ी में चार्ल्स रायरी और जॉन वाल्वोर्ड जैसे लोग शामिल होंगे।

ये वे लोग हैं जिन्हें आपके माता-पिता, आपके दादा-दादी, शायद आपके दादा-दादी जानते थे। जॉन वाल्वोर्ड और फिर ड्वाइट पेंटेकोस्ट नाम के एक व्यक्ति ने थिंग्स टू कम नामक 600 पन्नों की एक किताब लिखी। और ये लोग तब डलास के धर्मशास्त्री थे जिन्होंने मूल रूप से इन सभी लोगों को चर्चों में भेजा था।

अब, डिस्पेंसेशनलिज्म को समझने के लिए, हमें यह समझना होगा कि यह एक भविष्यसूचक समयरेखा है। और इसलिए, मैंने यहाँ एक समयरेखा रखी है, इसलिए मैं इसे समझाता हूँ। यह डिस्पेंसेशनलिज्म का मूल है।

यह समयरेखा है, और इस समयरेखा ने लोगों को उन्मुख किया। यह लगभग एक विश्वदृष्टि की तरह था। यह लगभग एक विश्वदृष्टि की तरह था जिसे लोग रखते थे।

तो सबसे पहले, आपके पास इज़राइल था, और इज़राइल भूमि, इज़राइल और कार्यों से जुड़ा था, कार्यों द्वारा उद्धार जैसी चीज़ जो उन्हें ये बलिदान करने थे। फिर चर्च आया, यीशु मरा, फिर से जी उठा, और चर्च की स्थापना हुई। तब अनुग्रह गति थी।

उस व्यक्ति का मानना था कि यह ईश्वर की कृपा से हुआ है। इसलिए, इस्राएल और चर्च के बीच एक अंतर है। यह उनके लिए बहुत बड़ी बात है, क्योंकि इस्राएल और चर्च के बीच का अंतर भी बहुत बड़ा है।

फिर चर्च युग के अंत में क्या होता है? मुझे यह कहना चाहिए: यह वास्तव में महत्वपूर्ण है। जब आप सुधारवादी लोगों से बात करते हैं, तो वे सुधारवादी बातों को स्थापित करने के लिए किन पुस्तकों का उपयोग करते हैं? मूल रूप से, बाइबल से, और मुझे यह स्पष्ट रूप से बताया गया है, रोमियों एक लेंस है, और गलातियों दूसरा है। तो, आप रोमियों और गलातियों, औचित्य और आश्वासन के लेंस के माध्यम से पूरी बाइबल को देखते हैं।

और आप बाइबल को रोमन और गलातियों के चश्मे से देखते हैं। अगर मैं कहता हूँ कि मैं मेनोनाइट हूँ, तो मेनोनाइट बाइबल की किस किताब पर डेरा डालते हैं, और वे बाइबल के बाकी हिस्से को उसी के ज़रिए देखते हैं? माउंट पर उपदेश। तो, अगर आप मेनोनाइट हैं, तो आप माउंट पर उपदेश देखते हैं, और फिर आप माउंट पर उपदेश के ज़रिए बाइबल के बाकी हिस्से की व्याख्या करते हैं।

जब आप डिस्पेंसेशनल होते हैं, तो आप जिन दो पुस्तकों का उपयोग करते हैं, वे हैं दानियेल और प्रकाशितवाक्य। दानियेल और प्रकाशितवाक्य वास्तव में महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं, और उन्होंने दानियेल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या करने में बहुत समय बिताया, इसे यथासंभव शाब्दिक रूप से लेने की कोशिश की। तो क्या होता है कि यह चार्ट प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में टूट जाता है।

आप नीचे प्रकाशितवाक्य के अंश देख सकते हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अध्याय 4 और 19 को महान क्लेश काल कहा जाता है। इसलिए, मसीह अपने चर्च के लिए आने के बाद, अपने चर्च को स्वर्गारोहित करता है।

वह उन्हें दूर ले जाता है। मूल रूप से, चर्च को क्लेश काल से पहले हटा दिया गया था, सात साल की अवधि जब एंटीक्रिस्ट ने शासन किया था। आपने 666 और इस तरह की सभी चीज़ों के बारे में सुना होगा।

यह क्लेश सात साल की अवधि है, जिसे मुख्य रूप से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में विपत्तियों, सात मुहरों, सात कटोरों और सात तुरहियों की अवधि के रूप में वर्णित किया गया है। यह क्लेश की अवधि है जब एंटीक्रिस्ट बेबीलोन में आता है और यह सब वर्णित है। तब उनके पास क्लेश की सात साल की अवधि थी, जो एक विशेष समय अवधि थी जब परमेश्वर का न्याय गिरने वाला था।

चर्च को परमेश्वर के न्याय से पहले ही स्वर्गारोहित कर लिया जाता है क्योंकि चर्च मसीह की कृपा के अधीन है, और इसलिए, हम न्याय के अधीन नहीं हो सकते। इसलिए चर्च को स्वर्गारोहित कर लिया जाता है। इसे प्री-ट्रिब रैप्चर कहा जाता है।

अब, यह वाक्यांशविज्ञान डिस्पेंसेशनलिस्ट्स के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण है, जैसे कि प्री-ट्रिब रैप्चर। दूसरे शब्दों में, क्लेश अवधि से पहले, चर्च को बाहर निकाल दिया जाता है। बाद में, ओलिवर बुसवेल जैसे कुछ लोग थे जिन्होंने फैसला किया कि, नहीं, क्लेश का पहला भाग इतना बुरा नहीं था और चर्च को क्लेश के बीच में ही बाहर निकाल दिया गया था।

इसलिए, उन्हें मध्य-संकट उत्साह कहा जाता है, ओलिवर बुसवेल। फिर, मोटे तौर पर, वेस्टमोंट में गुंड्री नाम का एक आदमी है, रॉबर्ट गुंड्री। वह पोस्ट-ट्रिब उत्साह की धारणा के साथ आया था कि चर्च क्लेश से गुजरा और फिर सहस्राब्दी आने से पहले बाहर निकाल लिया गया।

फिर, वे सहस्राब्दी की स्थापना के लिए मसीह के साथ वापस आए। तो, आपके पास सात साल की अवधि है। आपको एक प्री-ट्रिब रैप्चर मिला है।

कुछ लोग पारंपरिक व्यवस्थावाद, एक पूर्व-संकट उत्साह, मध्य-संकट उत्साह, बसवेल, और एक पश्चात-संकट उत्साह, रॉबर्ट गुंड्री के बारे में सोचते हैं। और फिर, क्लेश काल के बाद, मसीह एक हजार साल के लिए एक राज्य स्थापित करता है। यह रहस्योद्घाटन अध्याय 20 है।

राज्य को सहस्राब्दि कहा जाता है। इसलिए मोटे तौर पर, डिस्पेंसेशनलिज्म को प्री-मिलेनियम कहा जाता है। मसीह सहस्राब्दि से पहले वापस आता है।

सहस्राब्दी की स्थापना हो चुकी है। मसीह एक हजार साल तक पृथ्वी पर शासन करेगा। इस्राएल वापस अपनी भूमि पर आ गया है।

इस्राएल वापस धरती पर आ गया है। सहस्राब्दि एक ऐसा समय है जब इस्राएल के साथ फिर से जुड़ाव होता है, और मसीह अपने चर्च के साथ शासन करने के लिए वापस आता है। तो, क्या आप देखते हैं कि इस्राएल इसमें कैसे नाच रहा है और कैसे बाहर निकल रहा है? और फिर आपके पास सहस्राब्दि शासन है और इसे पूर्व-सहस्राब्दिवाद कहा जाता है।

और फिर, मुख्यतः प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में, नया यरूशलेम नीचे आता है। शाश्वत राज्य स्थापित होता है और हर कोई हमेशा के लिए एक साथ रहता है। तो ये व्यवस्थाएँ और समय की अवधियाँ हैं।

तो प्री-मिलेनियलिज्म है, जिसका मूल रूप से मतलब है कि मसीह ने एक हज़ार साल तक शासन किया है। एक है एमिलेनियलिज्म। यही वह बात है जिसे बहुत से लोग एमिलेनियलिज्म मानते हैं।

कि कोई सहस्राब्दी नहीं है। मसीह अभी हमारे दिलों में और परमेश्वर के लोगों में राज कर रहा है। और फिर, मूल रूप से, अंत में नया यरूशलेम आएगा।

बहुत से लोगों ने पोस्ट-मिलेनियलिज्म को काफी हद तक त्याग दिया है। ऐसा माना जाता था कि मसीह का राज्य अब धरती पर था, लेकिन यह बेहतर और बेहतर होता जा रहा था। और फिर, आखिरकार, अंत में, मसीह तब आएगा जब दुनिया उसके लिए तैयार होगी, लेकिन चीजें बेहतर और बेहतर नहीं हुई हैं।

इसलिए यह स्थिति ठीक नहीं है। फिर वहाँ प्री-ट्रिब रैचर, मिड-ट्रिब रैचर, पोस्ट-ट्रिब रैचर है। अब, इसका एक और पहलू जो, मुझे लगता है, 1960 और 70 के दशक में अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण था, वह हैल लिंडसे नाम का एक व्यक्ति था, जिसने एक किताब लिखी थी, लेट ग्रेट प्लैनेट अर्थ।

इस लेट ग्रेट प्लैनेट अर्थ की लाखों प्रतियां थीं। इसे लोकप्रिय संस्कृति में प्रचारित किया गया और इसने लोगों की कल्पना को आकर्षित किया। वियतनाम युद्ध चल रहा था, इसलिए उन्होंने रहस्योद्घाटन की पुस्तक में टिड्डियों को वियतनाम में वियतनाम के हेलीकॉप्टरों के रूप में देखा, जिनकी पूंछ में डंक लगे थे।

इसलिए, उन्होंने वियतनाम युद्ध का इस्तेमाल किया और फिर मूल रूप से वियतनाम युद्ध के प्रकाश में बाइबल पढ़ी। अब, जाहिर है, यह सही नहीं था। यह सही नहीं निकला, लेकिन उन्होंने लाखों प्रतियाँ बेचीं।

बाइबल को अपने साथ ले जाने की यह प्रवृत्ति लोकप्रिय स्तर पर व्यवस्थावाद की विशेषता है। वैसे, डलास सेमिनरी के विद्वान अब इससे कहीं आगे निकल चुके हैं। लोकप्रिय स्तर पर, वे एक हाथ में अखबार और दूसरे हाथ में बाइबल लेकर बाइबल पढ़ते हैं।

वे मूल रूप से बाइबल की व्याख्या करते हैं कि रूस के साथ क्या हो रहा है, चीन के साथ क्या हो रहा है, और अमेरिका के साथ क्या हो रहा है। और इसलिए उनके पास ये सभी तरह की बातें होंगी, यह बहुत भविष्यवादी है। जिस तरह से वे चीजों को देखते हैं, वह बहुत ही सर्वनाशकारी है।

हेल लिंडसे उनमें से एक थे। आप लोग लेफ्ट बिहाइंड सीरीज में टिम लाहे को जानते होंगे। यह फिर से, पारंपरिक डिस्पेंसेशनलिज्म को एक काल्पनिक संदर्भ में रखा गया है।

तो, मुझे लगता है कि यह अखबारों की व्याख्या उनके लिए एक समस्या है, क्योंकि यह हर 10 साल में बदल जाती है। अब, एक बात खत्म करने के लिए: डिस्पेंसेशनल आंदोलन के क्या फ़ायदे हैं? फ़ायदों में से एक यह है कि लोग अपनी बाइबल जानते हैं। मुझे उन्हें यह बताना होगा।

वे अपनी बाइबलों का अध्ययन करते हैं, और वे भविष्यवाणियों के ग्रंथों का अध्ययन करते हैं, और यह अच्छा है। और उनका परलोक विद्या पर ध्यान देना अच्छा है क्योंकि यीशु वास्तव में वापस आने वाले हैं। और इसलिए यह उनके लिए एक अच्छा ध्यान है।

मुझे लगता है कि वे इस बात से चूक गए हैं कि मुझे नहीं लगता कि उन्होंने सर्वनाश शैली को समझा है और इसे अधिक प्रतीकात्मक तरीके से कैसे लिया जाना चाहिए। और उन्होंने अपने अखबारों को हाथ में लेकर चीजों को शाब्दिक रूप से लेने की कोशिश की है, और मैं चाहता हूँ कि वे कभी-कभी अखबारों को नीचे रख दें क्योंकि वे बाइबल में कही गई बातों के अनुरूप नहीं हैं। आपको सर्वनाश शैली को समझना होगा।

और वैसे, पिछली गर्मियों में, मैंने डेव मैथ्यूसन को टेप किया था, जो यहाँ पढ़ाते थे, वे रहस्योद्घाटन की पुस्तक के विशेषज्ञ हैं, और वे रहस्योद्घाटन की पुस्तक के प्रति एक तरह से गैर-डिस्पेंसेशनलिस्ट दृष्टिकोण रखते हैं। और अगर आप रुचि रखते हैं, तो रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर 30 घंटे के व्याख्यान हैं, जिसे डेव प्रतीकात्मक तरीके से लेते हैं और आपको रहस्योद्घाटन की पुस्तक की वास्तव में अच्छी समझ देते हैं, लेकिन इसे शाब्दिक तरीके से नहीं लेते हैं, जो उस साहित्य की व्याख्या करने का एक गलत तरीका है। यह कविता को शाब्दिक रूप से लेने जैसा है, आप जानते हैं, वह पानी की नदियों के किनारे लगाए गए पेड़ की तरह होगा।

खैर, क्या इसका मतलब यह है कि वह एक पेड़ है? नहीं, यह एक रूपक है। और इसलिए डेव रहस्योद्घाटन की पुस्तक को एक तरह की राजनीतिक टिप्पणी या राजनीतिक कार्टून के रूप में देखता है, वास्तव में एक राजनीतिक कार्टून की तरह जिसका उद्देश्य यह वर्णन करना था कि उस समय रोम में क्या चल रहा था। मुझे लगता है कि यह पूरी तरह से समझ में आता है।

तो, वैसे भी, डिस्पेंसेशनल आंदोलन अभी भी मौजूद है। इसे अब प्रगतिशील डिस्पेंसेशनलिज्म के नाम से संशोधित किया गया है। डलास के बहुत से लोग, सच कहूँ तो, इस कैम्प में हो सकते हैं।

आपको अंतर पता नहीं चलेगा। इनमें से बहुत सी चीजें एक तरह से एक साथ मिल गई हैं। और इसलिए बहुत से पुराने प्रकार के कट्टरपंथी व्यवस्थावादी अब भी चर्चों में पाए जाते हैं।

हालाँकि, जहाँ तक शैक्षणिक संस्थानों का सवाल है, उनमें से ज्यादातर उससे आगे बढ़ चुके हैं। तो ये हैं डिस्पेंसेशनलिज्म के बारे में कुछ बातें। क्या आपके पास कोई सवाल है? बस जल्दी से।

वे अच्छे लोग हैं। मेरा मतलब है, जब मैं बड़ा हुआ, मेरे पिता बहुत उदार थे। अच्छाई के बारे में मेरा यही मतलब है।

मुझे याद है कि मेरे पिता लगभग हर रोज़ सामने की खिड़की के पास जाकर कहते थे, तुम्हें कुछ पता है? यीशु आज वापस आ सकते हैं। उन्होंने अपना पूरा जीवन इसी बात को ध्यान में रखकर जिया। यह एक अच्छी बात थी।

इसने उनके जीवन को आकार दिया, और यह एक अच्छी बात थी। और मुझे लगता है कि हमने उसमें से कुछ खो दिया है। इसलिए, इन सभी चीजों में अच्छे और बुरे पहलू हैं।

खैर, डॉ. ग्रीन। मैं शाही मशाल सौंप दूंगा। धन्यवाद, सर।

टेड इस बारे में मुझसे ज़्यादा जानता है। इसलिए, मैंने उससे दूसरे दिन पूछा कि क्या उसे कोई आपत्ति है। और वह मदद करने के लिए तैयार था। इसलिए ऐसा करने के लिए धन्यवाद टेड।

मैं वास्तव में इसकी सराहना करता हूँ। और जैसा कि उन्होंने कहा, मेरा मतलब है, डिस्पेंसेशनलिज़्म वास्तव में महत्वपूर्ण था। इसीलिए मैंने इसे प्राप्त किया है।

जब आप तीन व्यापक आंदोलनों के बारे में बात करते हैं, जिसे हम कट्टरपंथ कहते हैं, तो डिस्पेंसेशनलिज़्म पहला था जिसने कट्टरपंथ के लिए मंच तैयार करने में मदद की। और यह सबसे बड़ा था, यह वास्तव में तीन आंदोलनों में से सबसे बड़ा आंदोलन था, जो आज सच नहीं हो सकता है, जैसा कि टेड ने कहा, चीजें आगे बढ़ गई हैं, लेकिन यह सबसे बड़ा आंदोलन था जिसने उस मंच को तैयार किया जिसे हम मौलिक कहते हैं, जिसे कट्टरपंथ कहा जाता था। इसलिए यह वास्तव में महत्वपूर्ण था।

अरे, हमारे लिए ऐसा करने के लिए धन्यवाद। ठीक है। दूसरा आंदोलन पवित्रता आंदोलन है।

अब, मुझे पवित्रता आंदोलन पर बहुत लंबा व्याख्यान देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप जो कर सकते हैं वह यह है कि आप पीछे जा सकते हैं, और मैं इसे यहाँ रखूँगा, लेकिन आप पीछे जा सकते हैं, और आप वेस्ले पर अपने नोट्स देख सकते हैं क्योंकि जॉन वेस्ले पवित्रता आंदोलन के जनक थे। पवित्रता आंदोलन तब 19वीं सदी में आया, 20वीं सदी में आया, और कट्टरवाद का एक बहुत बड़ा हिस्सा बन गया, एक तरह से कट्टरवाद को आकार देने वाला। इसमें कोई संदेह नहीं है।

पवित्रता आंदोलन, अगर डिस्पेंसेशनलिज़्म, इतिहास के आधुनिक दृष्टिकोण, इतिहास के समकालीन दृष्टिकोण का एक प्रकार का दर्पण प्रतिबिंब था, जहाँ 1920, 1930 और 1940 के दशक में, लोगों ने इतिहास को मानव निर्मित और मानव निर्मित के रूप में देखा था। और अब डिस्पेंसेशनलिज़्म सामने आया है, और यह उसी का दर्पण प्रतिबिंब है। यह इसके विपरीत छवि है क्योंकि इतिहास मनुष्यों द्वारा गढ़ा नहीं जाता है; यह ईश्वर द्वारा गढ़ा जाता है, ईश्वर हस्तक्षेप करता है, और इसी तरह।

इसलिए, यदि डिस्पेंसेशनलिज़्म लोगों के इतिहास को देखने के तरीके का दर्पण प्रतिबिंब है, तो वेस्लेयन पवित्रता आंदोलन लोगों के नैतिक जीवन, नैतिक जीवन को देखने के तरीके का दर्पण प्रतिबिंब था। क्योंकि उदार ईसाई धर्म और उदार प्रोटेस्टेंटवाद नैतिक जीवन या नैतिक जीवन को इस रूप में देखते हैं कि हम अच्छे इंसान होने के नाते क्या करने में सक्षम हैं। हम एक अच्छा नैतिक जीवन जीने में सक्षम हैं।

उदारवादी प्रोटेस्टेंटवाद का कहना है कि हम मनुष्य होने के नाते अच्छे नैतिक, नैतिक काम करने में सक्षम हैं। उन्होंने मूल पाप के सिद्धांत को नकार दिया। वे स्वीकार करते हैं कि लोग पाप

करते हैं और गलतियाँ करते हैं, लेकिन हम किसी तरह के नैतिक कोड के अनुसार जीने में सक्षम हैं।

और, और, और, और यीशु हमारे महान आदर्श बन गए। ठीक है। वेस्लेयन आंदोलन उसी का प्रतिबिम्ब है।

और वेस्लेयन आंदोलन ने कट्टरवाद को आकार देना और उसमें व्याप्त होना शुरू कर दिया। इसका दर्पण यह है कि हम विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा की सेवकाई के बिना नैतिक और नैतिक जीवन जीने में सक्षम नहीं हैं। हमारे अंदर पाप के कारण, हम नैतिक, नैतिक प्रकार का जीवन जीने में असमर्थ हैं।

लेकिन क्योंकि पवित्र आत्मा विश्वासी पर आता है, पवित्र आत्मा विश्वासी के हृदय को शुद्ध करता है। और विश्वासी अब परमेश्वर से प्रेम करने और अपने पड़ोसी से प्रेम करने में सक्षम है। और इस तरह का, यह, यह एक तरह से कट्टरपंथ में वेस्लेयन मंत्र बन गया और डिस्पेंसेशनल प्रीमिलेनियलिज्म की तरह बन गया, जो कट्टरपंथ की एक और महत्वपूर्ण जड़ बन गया।

अब, यह लोगों के संदर्भ में, पृष्ठभूमि के संदर्भ में, संगठनों के संदर्भ में, और इसी तरह के अन्य मामलों में डिस्पेंसेशनल प्रीमिलेनियलिज्म से पूरी तरह से अलग है। मुझे कुछ हफ्ते पहले कक्षा छोड़नी पड़ी। और इसका कारण यह है कि मैं अपने संप्रदाय का प्रतिनिधित्व करता हूँ।

हम में से दो लोग वेस्लेयन होलीनेस कंसोर्टियम नामक संस्था में मेरे संप्रदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह विभिन्न संप्रदायों का एक संघ है जो इस तरह के वेस्लेयन होलीनेस वातावरण में विकसित हुआ है। और इसलिए आप कह सकते हैं कि यह एक तरह के कट्टरपंथी आंदोलनों के रूप में शुरू हुआ, और अब ज्यादातर खुद को इंजील आंदोलन या इंजील संप्रदाय मानते हैं।

लेकिन वेस्लेयन होलीनेस कंसोर्टियम उन वेस्लेयन होलीनेस स्कूलों का एक संघ है, न केवल स्कूल, बल्कि संप्रदाय। तो, इसने कट्टरवाद को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तीसरा, और इसके लिए, मुझे अपने नोट्स की आवश्यकता है।

तो, तीसरा जिसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, ओह, तो फिर से, वेस्लेयन पवित्रता थी, जो नैतिकता और आचार के आधुनिक दृष्टिकोण की एक दर्पण छवि है। तो अब इसका तीसरा भाग, जैसा कि आप अपनी रूपरेखा से देख सकते हैं, पेंटेकोस्टलिज्म है। ठीक है, तो मुझे पेंटेकोस्टलिज्म के बारे में कुछ बातें कहने दें।

सबसे पहले, पेंटेकोस्टलिज्म भी दर्पण छवि है। डिस्पेंसेशनल प्रीमिलेनियलिज्म, वेस्लेयनिज्म की तरह, अब 20वीं सदी की शुरुआत में, आपके पास पेंटेकोस्टलिज्म है। यह अनुभव की दर्पण छवि है।

क्योंकि याद रखें कि फ्रेडरिक लीयरमेकर ने गेफुहल की परिभाषा दी थी। गेफुहल क्या है? गेफुहल अनुभव है, ईश्वर के साथ एक होने का अनुभव। इसलिए, उदार प्रोटेस्टेंटवाद ने इस पर जोर दिया।

ईसाई धर्म क्या है? ईसाई धर्म अनुभव है। हालाँकि, इसका दर्पण चित्र यह है कि पेंटेकोस्टलिज्म इस पूरे तर्क में यह लाया है कि अनुभव हमारे भीतर से नहीं आता है। यह लगभग वैसा ही है जैसे कि उदार प्रोटेस्टेंटिज्म में, आप ईश्वर की संतान बनने की इच्छा और इसी तरह के अन्य अनुभवों के लिए काम कर सकते हैं, ईश्वर को जानना चाहते हैं, ईश्वर पर निर्भर रहना चाहते हैं।

पेंटेकोस्टलिज्म सामने आता है और कहता है कि अनुभव ही वह तरीका है जिससे हम ईसाई धर्म को मापेंगे, लेकिन यह हमसे नहीं आता। अनुभव हमें ईश्वर द्वारा दिया जाता है। इसलिए यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम बनाते हैं।

यह भगवान है। यह भगवान द्वारा प्रदान किया गया है। इसलिए, एक तरह से, यह एक तरह की दर्पण छवि है।

अनुभव प्राकृतिक नहीं है, बल्कि यह अलौकिक है। पेंटेकोस्टलिज्म 20वीं सदी में शुरू हुआ एक आंदोलन था जिसने ईसाई अनुभव के अलौकिक पहलू पर जोर दिया। अब, जब मैं पेंटेकोस्टलिज्म के बारे में बात करता हूँ, तो हम बस एक मिनट में एक नाम का उल्लेख करने जा रहे हैं, लेकिन जब मैं पेंटेकोस्टलिज्म के बारे में बात करता हूँ, तो यहां कुछ नाम दिए गए हैं जिनका उल्लेख टेड ने हमारे लिए किया था।

लेकिन जब मैं पेंटेकोस्टलिज्म के बारे में बात करता हूँ, तो मेरा मतलब है कि 20वीं सदी की शुरुआत में पेंटेकोस्टलिज्म में पांच परंपराएं थीं। इसमें पांच परंपराएं थीं जिन्होंने इसे बनाया, जिसने इसे आकार दिया। और फिर हम यहां एक महत्वपूर्ण नाम पर पहुंचेंगे।

तो, मैं पेंटेकोस्टलिज्म की पांच परंपराओं का उल्लेख करना चाहूंगा जिन्होंने इस आंदोलन को आकार दिया। और इसी तरह, यह आंदोलन अमेरिकी कट्टरवाद को आकार देने में मदद करेगा। तो, उनमें से एक पवित्रीकरण पर जोर था।

आप कह सकते हैं कि यह लगभग वेस्लेयन परंपरा थी जिसने पेंटेकोस्टलिज्म को आकार देने में मदद की क्योंकि शुरुआती पेंटेकोस्टल आंदोलन ने विश्वासियों के पवित्रीकरण के बारे में बात की थी। तो, विश्वासियों का पहला बड़ा कदम धर्म परिवर्तन या औचित्य है। विश्वासियों के लिए दूसरा बड़ा कदम पवित्रीकरण, हृदय की शुद्धता है।

खैर, पेंटेकोस्टलिज्म ने उस परंपरा को अपनाया। पेंटेकोस्टलिज्म ने एक तरह से उस परंपरा की भाषा उधार ली। तो यह एक है।

नंबर दो, दूसरी परंपरा यह थी कि निश्चित रूप से ऐसे लोग थे जो पवित्र आत्मा के सशक्तीकरण के बारे में बात कर रहे थे। इसलिए, पवित्र आत्मा मंत्रालय के लिए सशक्त बनाता है। और पवित्र आत्मा के सशक्तीकरण की वह कल्पना या वह परंपरा पेंटेकोस्टलिज्म का हिस्सा बन गई, जाहिर है, पेंटेकोस्टलिज्म का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई।

तीसरी परंपरा जिसने पेंटेकोस्टलिज्म को बनाने में मदद की, वह एक डिस्पेंसेशनल परंपरा थी क्योंकि डिस्पेंसेशनल प्रीमिलेनियलिज्म के टुकड़े पेंटेकोस्टलिज्म में आते हैं और पेंटेकोस्टलिज्म को आकार देने में मदद करते हैं। तो यह नंबर तीन है। नंबर चार, यहाँ पहले से ही आस्था उपचार पर जोर दिया गया था।

तो, आस्था उपचार पेंटेकोस्टलिज्म का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा बनने जा रहा है। तो, आस्था उपचार में विश्वास। और नंबर पांच, मेरे पास पावरपाइंट पर आपके लिए यह शब्द नहीं है, लेकिन नंबर पांच एक आंदोलन है जिसे रिस्टोरेशनलिज्म कहा जाता है।

तो, बस शब्द 'पुनर्स्थापना' लिखिए और उससे संज्ञा बनाइए। पुनर्स्थापनवाद। बस उस क्रिया को संज्ञा बनाइए।

पुनर्स्थापनवाद। पुनर्स्थापनवाद एक बहुत ही दिलचस्प आंदोलन था। इसके कई परिणाम हैं।

हालाँकि, पुनर्स्थापनावाद मूल रूप से एक विश्वास था कि आपका चर्च न्यू टेस्टामेंट चर्च था जिसे 20वीं सदी में लाया गया था। आप आदिम न्यू टेस्टामेंट चर्च को पुनर्स्थापित कर रहे हैं। आप इसे अद्यतित कर रहे हैं।

आप इसे पुनर्स्थापित कर रहे हैं। इसलिए, आप अपने संप्रदाय, अपने चर्च या अपने समूह को नए नियम के रूप में सोचते हैं, नए नियम के चर्च की तरह। इसलिए पुनर्स्थापनावाद आता है।

तो, आपको ये पाँच परंपराएँ मिलती हैं। सभी लोग और छोटे समूह और इसी तरह की अन्य चीजें थीं जो विभिन्न चीजों पर जोर देती थीं या कभी-कभी बड़े समूह जैसे कि डिस्पेंसेशनलिस्ट या वेस्लेयन। लेकिन आपको ये पाँच परंपराएँ मिलती हैं, वे एक साथ आती हैं।

और याद रखें, जैसा कि हमने इस कोर्स में कहा, कि कभी-कभी यह उस समय विचार रखने वाले व्यक्ति पर निर्भर करता है। खैर, इसके लिए व्यक्ति चार्ल्स फॉक्स परम नाम का एक आदमी था। चार्ल्स फॉक्स परम।

चार्ल्स फॉक्स परम, संक्षेप में, 20वीं सदी की शुरुआत में, मूल रूप से वह एक आस्था चिकित्सक थे, एक स्वतंत्र, घुमंतू, मध्यपश्चिमी किस्म के आस्था चिकित्सक। उन्होंने यही किया, एक प्रचारक किस्म के व्यक्ति। चार्ल्स फॉक्स परम निश्चित रूप से एक बहुत ही करिश्माई व्यक्ति रहे होंगे।

चार्ल्स फॉक्स परम के सुसमाचार प्रचार कार्य का एक हिस्सा सिर्फ आस्था उपचार करना नहीं था, बल्कि उनके लिए एक अनिवार्य संकेत था कि आप एक आस्तिक हैं, एक सच्चे आस्तिक हैं, और वह था अन्य भाषाओं में बोलना। इसलिए परम और उनके अनुयायियों और अन्य लोगों के लिए अन्य भाषाओं में बोलना एक महत्वपूर्ण संकेत बन जाता है कि आप एक आस्तिक हैं। इसलिए आप उन सभी परंपराओं को एक साथ रखते हैं जिनके बारे में हमने बात की है, और फिर आप इस बहुत ही करिश्माई व्यक्ति, आस्था उपचारक, अन्य भाषाओं में बोलने वाले व्यक्ति के बारे में बात करते हैं, और लोगों को यह विश्वास दिलाते हैं कि अगर वे वास्तव में खुद को सच्चे आस्तिक के रूप में पहचानना चाहते हैं तो उन्हें अन्य भाषाओं में बोलना होगा।

तो अनुयायियों, संक्षेप में, हमने कट्टरवाद के साथ संप्रदायवाद के बारे में बहुत अधिक बात नहीं की है, लेकिन 1914 में, उन्होंने और उनके अनुयायियों ने एक पेंटेकोस्टल समूह बनाया जिसे असेंबली ऑफ गॉड कहा जाता है। और 1914 में असेंबली ऑफ गॉड, संप्रदायिक जीवन के संदर्भ में पेंटेकोस्टल अनुभव का सर्वोत्कृष्ट प्रकार बन गया। और यहां तक कि पेंटेकोस्टल शब्द भी, निश्चित रूप से, पेंटेकोस्ट और इसी तरह के अन्य शब्दों से आया है।

तो यह तीसरा समूह है। अब, पेंटेकोस्टलिज्म एक विशाल समूह बन गया है, और आज सभी पेंटेकोस्टल खुद को कट्टरपंथी नहीं मानते। आज पेंटेकोस्टल संप्रदाय हैं जो खुद को इंजीलवादी के रूप में पहचानते हैं।

अब यह अगला व्याख्यान है, इसलिए हमें यहाँ इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। फिर भी, कट्टरपंथ को आकार देने वाले तीन बहुत ही दिलचस्प समूह हैं। ठीक है, तो उन तीन समूहों के बारे में सवाल? डिस्पेंसेशनलिस्ट, वेस्लेयन होलीनेस लोग, पेंटेकोस्टल लोग, और फिर जो आपको मिला वह मूल रूप से अमेरिकी कट्टरपंथ है।

ठीक है, अब हम C के अंतर्गत क्या करने जा रहे हैं? मैं दो अन्य समूहों का उल्लेख करना चाहता हूँ जो कट्टरवाद के गठन और आकार लेने के समय ही सामने आए थे। ये दो अन्य समूह कभी-कभी कट्टरवाद से भ्रमित हो जाते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि उन्हें भ्रमित करने के लिए, हम उन्हें अलग करने जा रहे हैं और अन्य समूहों के रूप में उन पर व्याख्यान देंगे, और मैं उनमें से दो का उल्लेख करने जा रहा हूँ।

ठीक है, मैं क्रिश्चियन साइंस का ज़िक्र करने जा रहा हूँ। क्रिश्चियन साइंस की शुरुआत मैरी बेकर एडी नाम की एक महिला ने की थी। मुझे उसके नाम पर वापस जाना चाहिए क्योंकि मुझे उसकी तारीखें मिल गई हैं।

मैरी बेकर एडी, 1821 से 1910 तक। तो, क्रिश्चियन साइंस। ठीक है, अब, क्रिश्चियन साइंस क्या है? भले ही इसे कट्टरवाद के साथ पहचाना गया, लेकिन यह वास्तव में कट्टरवाद से अलग था।

क्योंकि ईसाई विज्ञान एक न्यू इंग्लैंड, प्रोटेस्टेंट, उदारवादी, आदर्शवादी प्रकार का धार्मिक विश्वास था, इसलिए, न्यू इंग्लैंड उदारवाद, उदारवाद और आदर्शवाद के संदर्भ में मैरी बेकर एडी के साथ वे सभी प्रभाव एक साथ आए। मैरी बेकर एडी, एक बहुत ही करिश्माई व्यक्ति थीं, और मैरी बेकर एडी ने क्रिश्चियन साइंस मूवमेंट नामक इस आंदोलन की स्थापना की।

तो मूल रूप से, मैरी बेकर एडी ने ईसाई विज्ञान पढ़ाया, जो आज भी पढ़ाया जाता है, और यह मूल रूप से एक ज्ञानवादी आंदोलन है। क्योंकि ईसाई विज्ञान सिखाता है कि वास्तविकता में, वास्तव में, वास्तविक आदर्श वास्तविकता में, कोई पाप नहीं है, कोई बीमारी नहीं है, कोई रोग नहीं है, कोई मृत्यु नहीं है। ये सभी चीजें पतन के परिणामस्वरूप हैं, लेकिन ईसाई इन सभी चीजों पर काबू पाने में सक्षम है।

तो इस तरह से बुराई, पाप, बीमारी और मृत्यु और यहाँ तक कि पदार्थ के अस्तित्व को भी नकार दिया गया। ठीक है, तो ये सभी चीजें झूठी मान्यताओं के कारण हैं। इसलिए, अगर आप सही विश्वास प्राप्त कर सकते हैं, अगर आप बाइबल और यीशु को सही मायने में समझ सकते हैं, तो आप इन सभी चीजों पर काबू पा सकेंगे, जिसमें बीमारी भी शामिल है।

और शायद जिस चीज़ के लिए वे दोनों सबसे ज़्यादा जाने जाते हैं, वह है क्रिश्चियन साइंस, सही ज्ञान के साथ बीमारी पर काबू पाना। तो शायद यही वह चीज़ है जिसके लिए वे सबसे ज़्यादा जाने जाते हैं, मुझे नहीं पता। तो क्रिश्चियन साइंस।

तो, मैं अपने अमेरिकी ईसाई धर्म पाठ्यक्रम के साथ क्या करता हूँ, मैं छात्रों को ले जाता हूँ; यह एक दिलचस्प दिन है, मैं कहूँगा, लेकिन मैं छात्रों को दो फील्ड ट्रिप के लिए बोस्टन ले जाता हूँ। हालाँकि, पहली फील्ड ट्रिप बोस्टन में क्रिश्चियन साइंस चर्च से शुरू हुई क्योंकि यह सब बोस्टन में शुरू हुआ, बोस्टन में ईसाई विज्ञान के लिए मातृ चर्च। और क्या आप में से कोई कभी चर्च गया है? यह बहुत दिलचस्प है।

मैं अपने छात्रों को चर्च में जाते समय एक बात ध्यान में रखने के लिए कहता हूँ, आप चर्च के शिलालेखों में देखेंगे, वहाँ यीशु या पॉल के कथन का एक शिलालेख होगा, और फिर उसके ठीक बगल में, उसी आँख के स्तर पर, मैरी बेकर एडी द्वारा एक कथन का शिलालेख होगा। और यह पूरे चर्च में है, जो बहुत ही दिलचस्प है। और फिर, जब आप चर्च में जाते हैं, तो वहाँ दो पुलपिट होते हैं।

वे एक दूसरे के बगल में हैं, और एक पुलपिट पर बाइबिल है, और दूसरे पुलपिट पर मैरी बेकर एडी का काम है। और इसलिए, जब आप अंदर जाते हैं... मैं वास्तव में कभी किसी धार्मिक सेवा में नहीं गया, लेकिन हर साल, हम चर्च का दौरा करते हैं, इसलिए मैं इस कहानी को अच्छी तरह से जानता हूँ। लेकिन जब आप बुधवार की रात या रविवार की सुबह धार्मिक सेवा के लिए जाते हैं, तो आधिकारिक कार्यों से एक अंश पढ़ा जाएगा, और दोनों पुलपिट इसे प्रदर्शित करते हैं।

वहाँ, वे एक दूसरे के बगल में खड़े हैं। दुनिया के हर ईसाई विज्ञान चर्च में, आपके पास दो पुलपिट हैं, एक बाइबिल के साथ और दूसरा मैरी बेकर एडी के कार्यों के साथ, शास्त्रों की कुंजी के रूप में विज्ञान और स्वास्थ्य। तो, बहुत, बहुत दिलचस्प आंदोलन।

कभी-कभी इसे कट्टरपंथ से जोड़कर देखा जाता है, लेकिन यह ईसाई कट्टरपंथ का हिस्सा नहीं है। लेकिन कभी-कभी इसे कट्टरपंथ से जोड़कर देखा जाता है। हालाँकि, यह एक ही समय पर आया था।

चूँकि यह कट्टरवाद के साथ ही उभरा था, इसलिए कभी-कभी इसे कट्टरवाद से थोड़ा भ्रमित कर दिया जाता था। मुझे नहीं पता कि आज लोग इसे भ्रमित करते हैं या नहीं, लेकिन अगर आपको कभी मौका मिले, तो आपको जाकर देखना चाहिए। उनके पास चर्च के दौर हैं।

आपको चर्च जाकर देखना चाहिए, भ्रमण करना चाहिए। वे आपको मदर चर्च दिखाते हैं, और फिर वे आपको दिखाते हैं... आपने शायद बोस्टन में बड़ा चर्च और बोस्टन में बड़ा क्रिश्चियन

साइंस कॉम्प्लेक्स देखा होगा। क्या आपने प्रूडेंशियल सेंटर के पास इसे देखा है? तो क्रिश्चियन साइंस निश्चित रूप से इस सामान्य संस्कृति का एक हिस्सा है, लेकिन इसे कट्टरवाद के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।

दूसरा शायद कट्टरवाद से भी ज़्यादा भ्रमित था, और यह चार्ल्स टेज़ रसेल नामक एक व्यक्ति द्वारा स्थापित एक आंदोलन है। और यह एक समूह है जिसे यहोवा के साक्षी कहा जाता है। यहोवा के साक्षी।

ठीक है। अब, यहोवा के साक्षी दावा करते हैं कि वे परमेश्वर के सच्चे लोग हैं। और उनके पूजा स्थल, मुझे लगता है कि यह नए नियम से दिलचस्प है, उनके पूजा स्थलों को किंगडम हॉल कहा जाता है।

तो, यहाँ यहोवा के साक्षियों का एक राज्यगृह है। लेकिन वे परमेश्वर के सच्चे और एकमात्र लोग होने का दावा करते हैं। हालाँकि, वे मूल रूप से यूनिटेरियन हैं, उनके... वे पिता, पुत्र या पवित्र आत्मा के संदर्भ में त्रित्ववादी नहीं हैं; मूल रूप से, वे यूनिटेरियन हैं।

और एक अर्थ में हर आस्तिक एक छोटा सा जी वाला भगवान है और इसी तरह, लेकिन वे भगवान के एकमात्र और सच्चे लोग हैं। और एक तरह की नैतिक सख्ती है जो मुझे लगता है कि बहुत से लोगों को यहोवा के साक्षियों की ओर आकर्षित करती है। अब, वे आकर्षित होने वाले लोगों के मामले में ईसाई विज्ञान के बिल्कुल विपरीत हैं।

यह बहुत दिलचस्प है कि ईसाई विज्ञान ने धनवान, प्रभावशाली और शक्तिशाली लोगों को आकर्षित किया क्योंकि यह आपके जीवन के बारे में एक बहुत ही सकारात्मक संदेश था। दूसरी ओर, यहोवा के साक्षियों ने जीवन के हाशिये पर पड़े लोगों को आकर्षित किया। उन्होंने एक तरह के सामाजिक बाहरी लोगों को आकर्षित किया।

यहोवा के साक्षी, संप्रदाय ने लोगों को एक तरह से जीने का कारण दिया। हो सकता है कि उनके पास कोई पैसा न हो, हो सकता है कि उनके पास कोई संपत्ति न हो, वे सामाजिक रूप से स्वीकार्य न हों या जो भी हो, लेकिन यहाँ एक संप्रदाय है जो मुझे एक सख्त जीवन, एक बाइबिल जीवन के लिए बुलाता है, जैसा कि वे व्याख्या कर रहे थे, बेशक। एक सख्त जीवन, एक बाइबिल जीवन, मुझे मेरे जीवन में अनुशासन देता है जो मेरे पास नहीं है और जिसकी मुझे आवश्यकता है।

इसलिए, यह बहुत दिलचस्प है कि ये दोनों समूह अलग-अलग तरह के लोगों को आकर्षित करते हैं। यहोवा के साक्षियों को कट्टरपंथियों और कट्टरपंथी लोगों के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन वे अक्सर होते हैं। लेकिन वे रूढ़िवादिता के मामले में ईसाई नहीं हैं।

तो ये दो अन्य समूह हैं जिनका हम ज़िक्र करना चाहते थे। अब, क्या आपके पास दो अन्य समूहों के बारे में कोई सवाल है? चार्ल्स टेज़ रसेल, हाँ। यहाँ हम हैं, 1852-1916।

तो, आप देख सकते हैं कि मैरी बेकर एनी और चार्ल्स टेज़ रसेल दोनों ही ईसाई रूढ़िवाद में कट्टरपंथ के नेताओं के समय को एक तरह से ओवरलैप करते हैं। हाँ, टेड।

कार्ल हेनरी। कार्ल हेनरी। हाँ, जब हम इंजीलवाद के बारे में बात करेंगे तो हम उनके बारे में बात करेंगे। तो, मैंने नहीं किया; मैंने देखा कि मैंने उनके लिए तारीखें नहीं डाली हैं, और मुझे ऐसा करने की ज़रूरत है।

तो, हम अभी तक कार्ल हेनरी तक नहीं पहुंचे हैं। कार्ल एफएच हेनरी। हाँ।

क्या क्रिश्चियन साइंस साइंटोलॉजी से संबंधित है? नहीं, यह एक अच्छा सवाल है। वे अक्सर भ्रमित हो जाते हैं और वे इस बारे में घबरा जाते हैं। मुझे नहीं पता कि उन्हें ऐसा क्यों करना चाहिए, लेकिन वे इस बारे में घबरा जाते हैं।

लेकिन नहीं, साइंटोलॉजी हबर्ड नाम के एक व्यक्ति का नाम है और यह एक पूरी तरह से अलग दुनिया है। मुझे यकीन नहीं है कि वह कौन सी दुनिया है, लेकिन यह एक पूरी तरह से अलग दुनिया है। लेकिन ऐसा है, साइंटोलॉजी को कभी भी ईसाई कट्टरवाद के साथ भ्रमित नहीं किया गया है जैसे कि इन दो अन्य समूहों के साथ किया गया था।

और यह बहुत बाद की बात है, मुझे लगता है, मैं इसके बारे में ज़्यादा नहीं जानता, लेकिन मुझे लगता है कि यह बहुत बाद की बात है, जैसे पचास या साठ के दशक या ऐसा ही कुछ। और मुझे साइंटोलॉजी के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है, मुझे कबूल करना होगा। मैंने कभी क्रिश्चियन साइंस के बारे में नहीं सुना।

आपने कभी क्रिश्चियन साइंस के बारे में नहीं सुना है। आप बोस्टन में गए हैं, लेकिन क्या आपने बोस्टन में प्रूडेंशियल सेंटर के बारे में सुना है? ठीक है। क्रिश्चियन साइंस मॉनिटर उनकी खबर है, वहाँ था, उनका अखबार है, हालाँकि इसका प्रारूप और आकार और समय बदल गया है।

यह अब दैनिक नहीं है, लेकिन क्रिश्चियन साइंस मॉनिटर एक अखबार है। मैरी बेकर ने यह अखबार इसलिए शुरू किया क्योंकि वह दुनिया के बारे में क्रिश्चियन साइंस का नज़रिया देना चाहती थीं। उन्हें लगा कि दूसरे अखबार दुनिया की सही व्याख्या नहीं कर रहे हैं।

तो वह ऐसा करना चाहती थी, लेकिन यह काफी सम्मानित अखबार बन गया। लेकिन वापस बोस्टन, प्रूडेंशियल सेंटर पर आते हैं। आप लोग जानते हैं कि क्रिश्चियन साइंस सेंटर कहाँ है? आप जानते हैं कि प्रूडेंशियल सेंटर कहाँ है, है न? क्या आप जानते हैं कि प्रूडेंशियल सेंटर कहाँ है? ठीक है।

चलो हम आपको थोड़ा सा बताते हैं, आप जानते हैं, एक कोपले प्लेस, है न? ट्रिनिटी स्क़ायर, कोपले प्लेस। हम यहाँ कैसे कर रहे हैं? ठीक है। मुझे आप लोगों को, मुझे आपको बोस्टन में और अधिक ले जाना है।

खैर, प्रूडेंशियल सेंटर, क्रिश्चियन साइंस कॉम्प्लेक्स, मैं कहूंगा, बोस्टन में बहुत बड़ा है। यह बहुत बड़ा है। आप इसे मिस नहीं कर सकते।

अगर आप प्रूडेंशियल सेंटर एरिया, कोपले प्लेस, प्रूडेंशियल सेंटर में हैं, तो आप देखेंगे कि क्रिश्चियन साइंस कॉम्प्लेक्स कैसा दिखता है। और चर्च, मदर चर्च नहीं, मदर चर्च में शायद 300 या उससे ज़्यादा सीटें हैं। मदर चर्च के बगल में बना बड़ा चर्च तीन या 4,000 लोगों के बैठने की जगह वाला है।

यह दुनिया का 10वां सबसे बड़ा ऑर्गन है। यह एक विशाल चर्च है। और उनके पास एक विशाल शैक्षणिक संडे स्कूल भवन भी है।

उनके पास क्रिश्चियन साइंस मॉनिटर के लिए जगह है। और उनके पास एक प्रशासनिक भवन है जो, मेरा अनुमान है कि, मुझे नहीं पता, 20 मंजिल ऊंचा होगा या ऐसा ही कुछ। आप इसे मिस नहीं कर सकते।

यह बहुत बड़ी बात है। आप सही कह रहे हैं; आप क्रिश्चियन साइंस कॉम्प्लेक्स के ठीक बगल से गुजरे हैं। बिल्कुल।

खैर, क्रिश्चियन साइंस के बारे में यह एक और कहानी है। सबसे पहले, बोस्टन में जो परिसर आप देख रहे हैं वह बहुत बड़ा है। जिस दिन उन्होंने इसका निर्माण पूरा किया, जो कि मदर चर्च नहीं बल्कि पूरा परिसर होता, शायद 60 के दशक में या उसके आसपास, लेकिन जिस दिन उन्होंने इसका निर्माण पूरा किया, उसी दिन बंधक का भुगतान कर दिया गया था।

यह बहुत धनी है क्योंकि लोग अपना पैसा क्रिश्चियन साइंस को दान करते हैं क्योंकि वे बहुत धनी लोग हैं। हालाँकि, क्रिश्चियन साइंस के साथ क्या हो रहा है? चूँकि यह मदर चर्च है, इसलिए सेवा में काफी अच्छी उपस्थिति होगी। लेकिन दुनिया भर में क्रिश्चियन साइंस के साथ जो हो रहा है वह यह है कि इस आदर्शवादी संदेश के कारण इसकी संख्या बहुत तेज़ी से घट रही है कि पाप मौजूद नहीं है, भौतिक दुनिया वास्तव में मौजूद नहीं है, और मृत्यु और बीमारी मौजूद नहीं है।

इसे पढ़ना कठिन है, यह कठिन है, बुराई वास्तविकता में मौजूद नहीं है। जिस आधुनिक दुनिया में हम रहते हैं, उसके प्रकाश में उस संदेश को जारी रखना कठिन है। और इसलिए यह लोगों को क्रिश्चियन साइंस की ओर आकर्षित नहीं कर रहा है।

लेकिन यह वित्तीय रूप से काफी संपन्न है। लेकिन एक समय में, वे दुनिया भर में एक दिन में एक क्रिश्चियन साइंस चर्च को बंद कर रहे थे। इसलिए यह अब वैसा नहीं है जैसा पहले था।

यह मैरी बेकर एडी के समय में अपने चरम पर था। खैर, मौत, मौत के बारे में यह एक अजीब बात है। यह एक संक्रमण है।

बेशक, हम भी एक तरह से यही मानते हैं कि यह एक बदलाव है। इसलिए जब आप उनसे पूछते हैं तो यही सवाल होता है: वह वास्तव में मर गई, और वे भी मर गए। यह थोड़ा पेचीदा हो जाता है।

इसलिए जब हम अपने छात्रों के साथ क्रिश्चियन साइंस चर्च जाते हैं, तो मैं उनसे यही कहता हूँ कि चलो हम साथ में अच्छा समय बिताएँ। और हम उन पर उनके धर्मशास्त्र के बारे में दबाव नहीं डालते क्योंकि वे हमें एक विशेष दौरा देने के लिए बहुत दयालु हैं। हम टूर ग्रुप के साथ नहीं जाते।

हमारे पास क्रिश्चियन साइंस चर्च का एक विशेष दौरा है। तो, तो यह है, लेकिन यह थोड़ा कठिन है, आप जानते हैं? हाँ। तो क्रिश्चियन साइंस, जब आप, जब आप, अगर कोई क्रिश्चियन साइंस से बीमार है, एक ईसाई वैज्ञानिक बीमार है, तो वे मेडिकल डॉक्टर के पास नहीं जाते हैं।

वे क्रिश्चियन साइंस काउंसलर के पास जाते हैं। काउंसलर का एक खास नाम होता है। मुझे याद नहीं।

एक प्रशिक्षित व्यक्ति जो उन्हें उनकी बीमारी पर काबू पाने में मदद करता है और सही सोच, सही विचार और इसी तरह की अन्य बातों के साथ उनकी बीमारी पर काबू पाता है। उन्हें बुलाया जाता है; उन्हें परामर्शदाता नहीं कहा जाता है। इसका एक नाम है, लेकिन मैं इस समय उसके बारे में नहीं सोच सकता।

हालाँकि, यह एक व्याख्यान है, लेकिन ईसाई वैज्ञानिक कानून के साथ परेशानी में पड़ गए हैं क्योंकि उन्होंने कई बार ऐसा होने दिया है जब उनके बच्चे मर गए क्योंकि वे अपने बच्चों को किसी बीमारी या किसी और चीज़ के लिए उचित चिकित्सा सहायता पाने के लिए डॉक्टरों के पास नहीं ले गए, और बच्चा मर गया, और फिर राज्य इसमें शामिल हो गया, और राज्य माता-पिता को अदालत में ले गया, आप जानते हैं, और इसी तरह। ईसाई वैज्ञानिकों के साथ कई बार बहुत गड़बड़ हुई है। इसमें कोई शक नहीं।

ठीक है, तो इसके बारे में कुछ? ठीक है, मैं पेज पलट रहा हूँ। मैं पेज 15 पर हूँ, और हम कट्टरवाद के कुछ परिणाम देखना चाहते हैं, हम कट्टरवाद के कुछ परिणाम देखना चाहते हैं, और कट्टरवाद के बारे में जो आलोचनाएँ हुई हैं, उनमें से कुछ देखना चाहते हैं। ठीक है।

अब, यहाँ मैंने कार्ल हेनरी का उल्लेख इसलिए किया है क्योंकि वे इंजीलवादी हैं, लेकिन कार्ल हेनरी का प्रतिनिधित्व किया जाता है, और मुझे कार्ल एफएच हेनरी के लिए तिथियाँ प्राप्त करने की आवश्यकता है। लेकिन कार्ल एफएच हेनरी ऐसे लोगों के समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो मूल रूप से कट्टरपंथ में पले-बढ़े थे, और वे किसी तरह के कट्टरपंथी नहीं थे, लेकिन वे परंपरा में पले-बढ़े थे। इसलिए, वे परंपरा को जानते थे, और वे परंपरा को अच्छी तरह से जानते थे, और मुझे नहीं पता कि मैंने ऐसा क्यों किया, लेकिन आप उनका नाम लिख सकते हैं, कार्ल एफएच हेनरी, इसलिए उनका नाम लिखिए, और मुझे नहीं पता कि मैंने ऐसा क्यों किया, लेकिन कौन जानता है? मैं हमेशा नहीं जान सकता, लेकिन मैंने दूसरे नाम को नीचे लिखा है मैंने एक और नाम लिखा है जिसे मैं आपको दिखाना चाहता हूँ, इसलिए बस मेरे साथ रुकिए। ऐसा हो सकता है।

यह जीवन में कहीं न कहीं है। ऐसा नहीं है; चलो, मुझे यहाँ थोड़ा आराम करने दो। मैं बस दिखावा करता हूँ कि मैं यह नहीं कर रहा हूँ, इसलिए बस दिखावा करो।

क्या यह टेप किया जा रहा है, टेड? क्या हम इसे टेप से हटा सकते हैं? मुझे नहीं पता। यह कहीं न कहीं है। यह यहीं है, एडवर्ड जॉन कार्नेल।

एडवर्ड जॉन कार्नेल एक और नाम है जो ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है जो कट्टरपंथ में पला-बढ़ा था, लेकिन कार्ल एफएच हेनरी और एडवर्ड जॉन कार्नेल दोनों ही इंजीलवाद नामक आंदोलन में चले गए, और हम अगले व्याख्यान तक इंजीलवाद के बारे में चिंता नहीं करने जा रहे हैं। यह अगला व्याख्यान है। खैर, हम इस व्याख्यान में इसका उल्लेख करेंगे, लेकिन इसलिए, उनके पास कट्टरपंथ की कुछ आलोचनाएँ थीं।

तो, कट्टरवाद के परिणामों के संदर्भ में, तीन परिणाम हैं, और पहला हेनरी और कार्नेल जैसे लोगों द्वारा कट्टरवाद की आलोचना है। तो जो लोग कट्टरवाद में पले-बढ़े थे, जो इसे अंदर से जानते थे और जो इसके द्वारा सिखाई गई कुछ चीजों के लिए इसकी सराहना करते थे, फिर भी उन्हें लगा कि कट्टरवाद के इतने सारे महत्वपूर्ण पहलू थे कि उन्हें अंततः इसे छोड़ना पड़ा, और उन्होंने इसे छोड़ दिया, और हम अगले व्याख्यान में इसके बारे में बात करेंगे। तो, यह कहने के बाद, यहाँ कट्टरवाद की कुछ आलोचनाएँ हैं।

यहाँ कुछ ऐसी जगहें हैं जहाँ उन्हें लगा कि कट्टरवाद विफल हो गया है। तो, तो आज आप इसके साथ ठीक कर रहे हैं, तो हाँ, यहाँ। ठीक है, तो ये किसी भी आवश्यक क्रम में नहीं हैं।

मेरा आज नीचे जाने का इरादा नहीं था। ये किसी ज़रूरी क्रम में नहीं हैं, लेकिन ये, ये हैं, जो लोग परंपरा में पले-बढ़े थे, परंपरा को अंदर से जानते थे, उन्हें लगा कि अमेरिकी कट्टरवाद के साथ समस्याएँ हैं। ठीक है, नंबर एक, उन्हें लगा कि पहली समस्या आत्म-आलोचना करने में असमर्थता या अनिच्छा थी।

और आज भी, मुझे कहना है, आप जानते हैं, यह सिर्फ़ मेरा थोड़ा सा संदेहवादी होना है, लेकिन आज भी जब मैं इधर-उधर देखता हूँ और टेलीविज़न उपदेशक को देखता हूँ, तो सभी नहीं, लेकिन कुछ टेलीविज़न उपदेशक ऐसे उपदेश देते हैं जैसे कि भगवान ने आज उनसे बात की हो और वे आज रात आपसे बात कर रहे हों। आप जानते हैं, भगवान ने उन्हें यह दिया है; वे इसे आप तक पहुँचा रहे हैं। आपको कट्टरपंथ में कुछ लोगों से कोई मतलब नहीं मिलता, कोई आत्म-आलोचनात्मक भावना नहीं मिलती कि मैं यहाँ गलत हो सकता हूँ, या मुझे इसे फिर से कहना चाहिए था, या मुझे इसे फिर से कहना चाहिए था।

ऑगस्टीन जैसे महान धर्मशास्त्रियों के विपरीत, जो उन चीजों के बारे में जानते हैं जो उन्हें नहीं कहनी चाहिए थीं, कि उन्हें बेहतर तरीके से बारीकियों को समझना चाहिए था, या कि उन्हें जिस तरह से कहा उससे अलग तरीके से कुछ कहना चाहिए था। ऑगस्टीन ने वापसी पर एक पूरी चीज़ लिखी, जो उन्हें कहनी चाहिए थी, आप जानते हैं? इसलिए, आत्म-आलोचनात्मक होने में असमर्थता के साथ, पहला व्यक्ति जिसे अपने धर्मशास्त्र की आलोचना करनी चाहिए वह आप ही

होने चाहिए। और जैसा कि आप खुद को और आप क्या मानते हैं और इसी तरह की चीजों को देखते हैं।

तो यह नंबर एक है। फिर से, ये किसी भी आवश्यक क्रम में नहीं हैं। नंबर दो कभी-कभी शास्त्र का एक अजीब दृष्टिकोण है।

अब, ये लोग, जैसा कि टेड ने बहुत अच्छी तरह से उल्लेख किया है, अपनी बाइबल को बहुत अच्छी तरह से जानते थे, लेकिन कभी-कभी शास्त्र की उनकी व्याख्या बहुत अजीब हो सकती है, अक्सर भविष्यवाणी की बारीकियों में उलझे रहते हैं, जैसा कि हमने आज सुबह उल्लेख किया है। टेड और मैं कक्षा से पहले इस पुस्तक के बारे में बात कर रहे थे, लेकिन यहाँ एक दिलचस्प पुस्तक है, 88 कारण क्यों 1988 में रैप्चर होने जा रहा है। और फिर यह आपके पैसे के लिए सबसे अच्छी खरीद पुस्तक है क्योंकि पुस्तक का पहला भाग इस तरह से प्रकाशित किया गया है, फिर आप इसे पलटते हैं, और फिर पुस्तक का दूसरा भाग इस तरह से प्रकाशित होता है।

तो, आप उधार समय पर डैनियल के 70वें सप्ताह, आर्मागेडन और सहस्राब्दी, डैनियल 9.24 की बाइबल तिथियों को पढ़ सकते हैं। तो आपको इस पुस्तक पर दो-एक मिलते हैं, लेकिन 88 कारण क्यों 1988 में रैप्चर होने जा रहा है। जब आपके पास 88 कारण क्यों 1988 में रैप्चर होने जा रहा है, तो आप शास्त्र के बारे में बहुत ही अजीब दृष्टिकोण प्राप्त कर सकते हैं, जो वैसे, ऐसा नहीं हुआ, अगर आप सोच रहे हैं। तो ऐसा नहीं हुआ।

और इसलिए, यह बहुत ही समस्याजनक हो सकता है। अब, वहाँ थे; आपको इस पर मेरी बात पर विश्वास करने की ज़रूरत नहीं है; यह सच है, लेकिन वहाँ कट्टरपंथी थे जो रेडियो पर नहीं जाते थे। और वे रेडियो पर इसलिए नहीं जाते थे क्योंकि बाइबल में कहीं लिखा है, शैतान हवा का राजकुमार है।

इसलिए, वे मानते हैं कि शैतान हवा का राजकुमार है, इसलिए उन्हें रेडियो पर नहीं जाना चाहिए क्योंकि शैतान, आप जानते हैं, शैतानी है। अब, अधिकांश कट्टरपंथी ऐसा नहीं मानते। वे इस माध्यम का उपयोग करने के तरीके के बारे में बहुत समझदार हैं।

तो, लेकिन यह दूसरा है। तीसरा, यह अक्सर प्रेम के बजाय न्याय दिखा सकता है। ऐसा लगता है जैसे मत्ती 22 हमें परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करने की याद दिलाता है।

वे अक्सर प्यार के बजाय न्याय दिखा सकते हैं। और मेरे पास वास्तव में इसका एक व्यक्तिगत उदाहरण है, जिसके बारे में मैं आज बात नहीं करूंगा, लेकिन मैं शुक्रवार को आपसे बात करूंगा। और मुझे चौथा उदाहरण देने दें, और फिर हमें जाना होगा।

वे अक्सर स्वास्थ्य और धन के बारे में एक छोटा सा सुसमाचार प्रचार कर सकते हैं। यानी, यह एक स्वास्थ्य और धन का सुसमाचार है जहाँ अगर आप एक सच्चे ईसाई बनने जा रहे हैं, तो भगवान आपको बहुत सारा पैसा, बड़ी कारें और बड़ी हवेली वगैरह से आशीर्वाद देंगे। तो अब आप इसे, उदाहरण के लिए, आज टेलीविजन प्रचारकों पर पा सकते हैं।

और मैं उस व्यक्ति का ज़िक्र नहीं करूँगा जो मुझे संयोग से देखने को मिला। मुझे लगता है कि मैंने इस कोर्स में इसका ज़िक्र किया था, लेकिन मुझे यकीन नहीं है। और जब मैं एक बार इस विशेष उपदेशक को सुनने गया, तो वह अपने दर्शकों को, जो कि एक विशाल दर्शक वर्ग था, यह समझा रहा था कि चूँकि वे वास्तव में ईसाई हैं, इसलिए वे निश्चित हो सकते हैं कि उन्हें हमेशा विकलांगों के लिए आरक्षित पार्किंग स्थान के बगल में पार्किंग स्थान मिलेगा और इसी तरह की अन्य बातें।

लेकिन उन्हें वह नहीं मिल सकता, बेशक, क्योंकि वह आरक्षित है। उन्हें हमेशा पार्किंग की जगह मिलेगी, हालाँकि, उसके बगल में। तो, भगवान उन्हें वह देगा।

यह पक्का है। और वे इस पर भरोसा कर सकते हैं। इसलिए, जब मैं इसे देख रहा हूँ, तो मैं अपने आप से कह रहा हूँ, क्या यह सुसमाचार है? मुझे यहाँ विराम दो।

क्या यह सुसमाचार है? क्या यही यीशु का मतलब था जब उसने कहा कि परमेश्वर का राज्य निकट है? मुझे ऐसा नहीं लगता। इसलिए, आप इन लोगों पर कभी-कभी बहुत ही संक्षिप्त सुसमाचार, स्वास्थ्य और धन का सुसमाचार पा सकते हैं। इसलिए, मुझे आपको जाने देना होगा।

हम इसे शुक्रवार को समाप्त कर देंगे, और फिर हम अगले व्याख्यान पर आगे बढ़ेंगे। और आप जानते हैं कि हम जीवन में कहाँ हैं, है न? क्योंकि अगले सप्ताह हम सोमवार, बुधवार, शुक्रवार, अगले सप्ताह हैं। और फिर जब हम वापस आएँगे, तो हमारे पास कुछ दिनों का वीडियो होगा, कुछ दिन फाइनल के लिए तैयार होने में।

थैंक्सगिविंग ब्रेक के बाद, यह लगभग खत्म हो चुका है। तो, हम ठीक चल रहे हैं। ठीक है।

मैं शुक्रवार को आपसे मिलूँगा। आपका दिन शुभ हो, और आज आपकी मदद के लिए धन्यवाद, टेड। मैं वास्तव में इसकी सराहना करता हूँ। धन्यवाद।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 22 है, 20वीं सदी का कट्टरवाद, डिस्पेंसेशनलिज्म, होलीनेस मूवमेंट और पेंटेकोस्टलिज्म।